इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

Q. मौर्य कला की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए तथा बौद्ध धर्म के साथ उनके संबंध पर भी प्रकाश डालिए।

Sol. कला एवं संस्कृति किसी काल के मानवीय कल्पनाओं, देव रचनात्मकता को मूर्त रूप के जरिए प्रदर्शित करना है, जो किसी राष्ट्र के अमूल धरोहर के रूप में होता है। भारतीय इतिहास में कला परंपरा का विकास सिंधु घाटी सभ्यता से प्रारंभ हुआ तथापि कला में स्थायित्व निरंतरता का विकास मौर्यकालीन कला से माना जाता है।

मौर्यकालीन कला भारतीय कला के इतिहास में विशिष्ट स्थान रखता है। कला का वास्तविक सौंदर्यीकरण संवर्द्धन एवं विकास मौर्य कला शैली को जहाँ स्थानीय एवं भारतीय पारंपरिक शैली एवं विदेशी ईरानी शैली को संगम रुप में प्रदर्शित किया गया।

☞ **बी० जी० गोखले के अनुसार**- 'मौर्य काल से पूर्व भारत की कला का इतिहास भाषा की दृष्टिकोण से एक सादे और पुरातत्व दृष्टिकोण से खाली अलमारी की भाँति है।'

कला समीक्षकों के अनुसार मौर्य काल समृद्ध राजनैतिक स्थिति में कला के विविध रूपों का विकास हुआ।

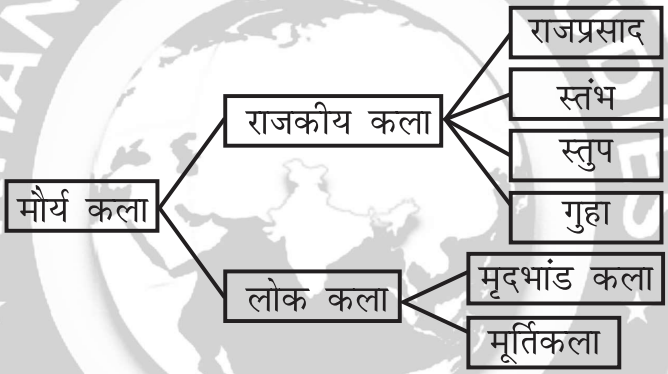

राजकीय संरक्षण में जहाँ स्थापत्य कला को प्रधानता दी गई, वहीं स्थानीय लोककला में मूर्तिकला का अद्वितीय विकास हुआ।

इस कला एवं परंपरा की पृष्ठभूमि का बिन्दुवार वर्णन निम्नलिखित हैं-

राजकीय कला :- शक्तिशाली, विस्तृत एवं समृद्ध केंद्रीय शासन के व्यवस्था के दौरान राजकीय कला के विविध रूपों में राज प्रसाद, स्तंभ, स्तूप एवं गुहा का निर्देशात्मक एवं अभूतपूर्व विकास हुआ।

राज प्रसाद :- मौर्यकालीन स्थापत्य की प्रथम कृति राजधानी पाटलिपुत्र में अवस्थित चन्द्रगुप्त मौर्यकालीन राजप्रसाद तथा उसका दुर्गीकरण है, जिसकी व्याख्या कौटिल्य रचित अर्थशास्त्र तथा मेगास्थानिज की पुस्तक 'इण्डिका' में स्पष्ट: वर्णन मिलता है।

स्ट्रैबों पाटलीपुत्र के दुर्गीकरण के बारे में कहते हैं कि यह समानान्तर चतुर्भुज है, जिसका आकार 80 × 18 स्टेडिया में फैला हुआ था तथा जिसके चारों ओर 700 फीट चौड़ी खाई थी और नगर के चारों ओर लकड़ी की दिवारें बनायी गई थी जिसमें बाण चलाने के लिए सुराखे छोड़ी गई थी। इस दुर्गीकरण का महत्व मध्य पाटलीपुत्र में स्थित कुम्हरार के राजप्रसाद का वर्णन मिलता है।

☞ **कुम्हरार स्थिति मौर्य सभा का दिन्यास (राजप्रसाद)** :- इस राजप्रसाद की वस्तु स्थिति चौथी शताब्दी में भी यथावत बनी हुई थी, जिसे देखकर फहियान ने कहा था– ''यह मनुष्यों द्वारा निर्मित नहीं वरन देवताओं द्वारा बनायी गयी थी''।

इतिहासकार एरियन ने कहा कि पाटलिपुत्रा के राजप्रसाद को सूसा तथा एकबतना के राजप्रसाद से बेहतर बताया।

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

स्तम्भ कला :- स्तम्भ कला के परंपरा का विकास भारत में मौर्य काल से ही हुआ। अशोक ने निर्माण मुख्यत: धम्म प्रचार-प्रसार के लिए करवाया और भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों में स्थापित करवाया।

अशोक कालीन निर्मित स्तम्भ अत्यंत महत्वपूर्ण और सारगर्भित विषय लिए हुए है जो मौर्य व्यवस्था को एक विशिष्ट पहचान देता है तथा कला सामग्री में वैश्विक शांति प्रदान करता है।

इन स्तंभों की प्रमुख विशेषताएँ है :-

1. एकाश्म पत्थर से बना हुआ है ।
2. चुनार एवं मथुरा के लाल बलुआ पत्थर से निर्मित है ।
3. चमकदार पॉलिश का प्रयोग जिसे 'नोप' कहा जाता था ।
4. इसकी ऊँचाई (35-50 फीट) तथा वजन (150 टन) ।
5. इस स्तम्भ का आधार चौड़ा तथा ऊपर पतला ।

सिंह - लौरिया नंदनगढ़ ।
हाथी - संकिशा ।
बैल - लौरिया अराराज, रामपुरवा ।

✦ **<u>मौर्यकालीन स्तम्भ तथा एकैमिनियन साम्राज्य की स्तम्भों के मध्य तुलना:-</u>**

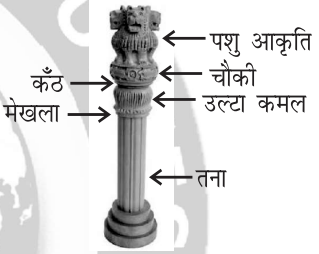

स्तम्भ निर्माण की परंपरा बहुत प्राचीन है और यह दृष्टिगत है कि है एकैमिनियन साम्राज्य में भी विशाल स्तम्भ बनाए जाते थे। परंतु मौर्यकालीन स्तम्भ एकैमिनियन स्तम्भों से भिन्न किस्म के है। मौर्यकालीन स्तम्भ चट्टानों से कटे हुए (एकाश्मक पत्थर से बने हुए) स्तम्भ है, जिनमें उत्कीर्णता कलाकार का कौशल स्पष्ट दिखाई देता है। जबकि एकैमिनियन स्तम्भ, राजमिस्त्री द्वारा अनेक टुकड़ों को जोड़कर बनाए गए थे ।

स्तूप :- महात्मा बुद्ध के महापरिनिर्वाण के पश्चात उनके शरीर के अवशेषों को आठ भागों में बाँटा गया तथा उन्हीं के अवशेषों पर समाधियों का निर्माण किया गया, जिन्हें स्तूप कहा जाता है। बौद्ध परंपरा के अनुसार सम्राट अशोक ने 84 हजार स्तूपों का निर्माण करवाया था, जिसमें बिहार में वैशाली, गया, इत्यादि जगह प्रमुख हैं।

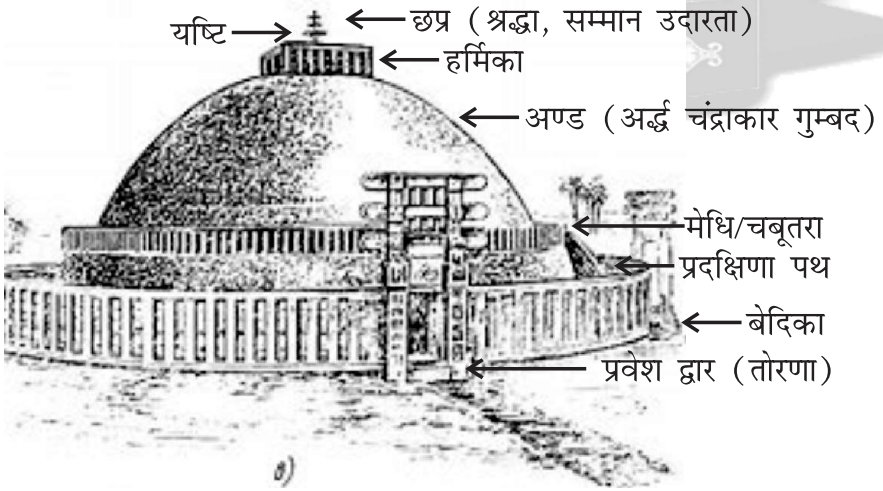

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

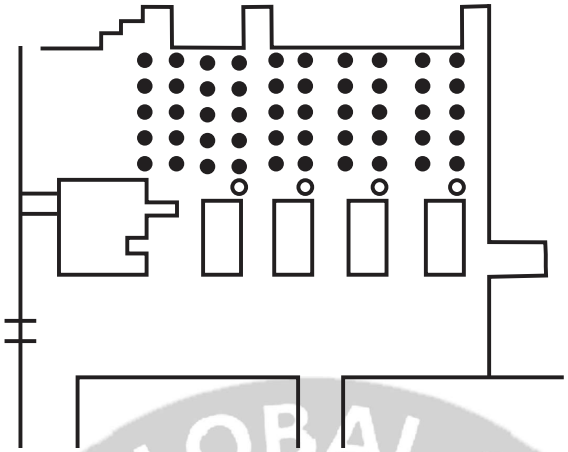

इसके फर्श एवं छत लकड़ी की बनी हुई है।
वर्तमान में 80 स्तंभ पाषाण युक्त का चन्द्रगुप्त मौर्य के काल का पुरातात्विक अवशेष, पटना के कुम्हरार नामक स्थान से प्राप्त हुआ है।

गुफा :- भिक्षुओं और आजीविकों के लिए अशोक और उसके पौत्र दशरथ ने गुफाओं का निर्माण कराया।

नागार्जुन पर्वत पर निर्मित गुफाएं :- दशरथ द्वारा गया के पहाड़ियों पर गोपी गुफा, लोमश ऋषि की गुफा, बर्थिका की गुफा निर्मित किया गया।

बराबर पहाड़ी पर निर्मित गुफाएँ :- अशोक द्वारा निर्मित गुफाओं में 'सुदामा एवं कर्ण चौपड़' जो जहानाबाद में स्थित है।

संरचनात्मक विशेषताएँ :–

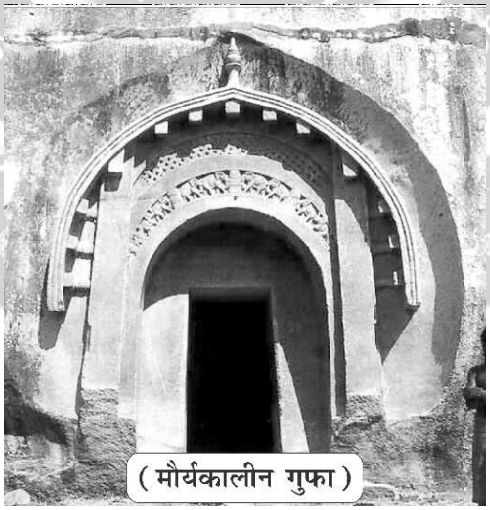

(मौर्यकालीन गुफा)

- चतुर्भुजाकार कमरा
- वेलनाकार छत
- दिवारों एवं छतों पर चमकदार पॉलिश
- लकड़ी का द्वार

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

लोककला :- मौर्यकाल में जनमानस के बीच लोकरूचि की वस्तुओं के निर्माण हेतु कलाकारों ने दरबार से बाहर वस्तुओं का निर्माण किया। (जैसे:- मूर्तिकला का उत्कृष्ट नमूना)

(i) लोहानीपुर (पटना) से प्राप्त दो नग्न पुरुषों की मूर्तियां, जिसका निर्माण जैन शैली में कायोत्सर्ग मुद्रा में हुआ ।

(ii) कुम्हार से विभिन्न पशु-पक्षी तथा नर-नारियों की मृण्मूर्तियां मिली है।

(ii) दीदारगंज से चामर ग्रहिणिका मूर्ति प्राप्त हुई है जो बलुआ पत्थर से निर्मित है एवं होठों पर मुस्कान वाली यह मूर्ति अपनी सजीविता के लिए जानी जाती है। जो नारी सौंदर्य का विशिष्ट वर्णन करती है।

विशेषताएँ :-

(i) मौर्यकाल की मूर्तिया लोक धर्म का आधार बनी एवं इस काल में हाथी, घोड़ा, बैल, कुत्ता, हिरन, मोर, तोता इत्यादि की मूर्तियां बनायी गयी ।

(ii) मौर्यकालीन मूर्तियां शांति और शालीनता का प्रतीक है तथा इसमें बलुआ पत्थर, भूरे पत्थर और चकदार पॉलिश का प्रयोग किया गया है।

(iii) इस कला के मूर्तियों में सजीविता तथा सौन्दर्यता का विशेष ध्यान रखा गया है।

मौर्य कला पर विदेशी प्रभाव :- मौर्य कला पर विदेशी कला, जिसमें ईरानी कला का सर्वाधिक प्रभाव माना जाता है, डॉ० स्पूनर मौर्यकालीन भवन को पार्सेपोलिस के सौ स्तम्भों की महल पर आधारित मानते हैं। अशोक के स्तम्भों के शीर्ष फलक पर उत्कीर्ण पशुओं का निर्माण शैली ईरान से प्रभावित मानी जाती है। वहीं वासुदेव शरण अग्रवाल, आर. के मुखर्जी, एस. पी. कुर गुप्त और हैवेल आदि विद्वानों के अनुसार मौर्यकालीन वस्तुकला पूर्णत: भारतीय है।

एस. पी. गुप्त:- 'ईरान के एकैमिनियन साम्राज्य के पतन एवं अशोक की कलाकृतियों में 80 वर्ष का अंतर है।'

हैवेल :- उल्टे कमल वाले स्तम्भ का निर्माण का शीर्ष भाग ईरानी शैली की घण्टी नहीं है बल्कि विष्णु के कमल का फूल है।

साथ ही स्तम्भों में हाथियों की मूर्ति का होना इस बात की पुष्टि करता है कि मौर्य कला निश्चित रूप से भारतीय कला थी।

उपरोक्त कथनों से स्पष्ट कहा जा सकता है कि मौर्य कला विदेश कला (ईरानी कला) का प्रारूप नहीं है।

बौद्ध धर्म के साथ संबंध :- अनेक बौद्ध स्थापत्यों जैसे साँची, भरहुत, सारनाथ स्तूपों के अलावे अनेक बौद्ध बिहारों का निर्माण मौर्य शासकों द्वारा किया गया।

भिक्षुओं और आजीवकों के लिए बराबर और नागार्जुन पहाड़ियों में कई गुफाओं का निर्माण भी किया गया। बौद्ध धर्म अपनाने के बाद अशोक ने बौद्ध नीतियों एवं उनके आदर्शों का प्रचार-प्रसार भारत के बाहर भी कई देशों में करवाया।

सम्राट अशोक द्वारा स्थापित शिलालेखों, स्तम्भलेखों इत्यादि में बौद्ध धर्म के धम्म के बारे में जानकारी मिलती है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है मौर्यकाल केवल राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक संदर्भों में विशिष्ट नहीं थी बल्कि भारतीय कला परंपरा के / व्यवस्थित विकास के दृष्टि से भी उल्लेखनीय है। मौर्यकाल के मूलभूत विशेषता के केन्द्रीकरण एवं राज्य के संरक्षण की प्रवृत्ति कला क्षेत्र में भी दिखाई देती है।

वस्तुत: मौर्यकाल में न सिर्फ कला के विविध पक्ष विस्तारित हुए, बल्कि कला में उन तत्वों का समावेशन भी हुआ जो आगे चलकर निरंतर विकसित होते हुए भारतीय कला, परंपरा एवं सांस्कृतिक विकास के विशिष्ट लक्षण बन सकें। अत: मौर्यकालीन कला नि:संदेह भारतीय संस्कृति की अनमोल धरोहर है।

●●●

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे Candidate should not write in this margin

Q. पाल कालीन स्थापत्य, मूर्ति कला एवं चित्र कला की मुख्य विशेषताएं बताएं तथा बौद्ध धर्म के साथ उनके संबंधों पर भी प्रकाश डालिए।

Sol. पालकालीन कला भारतीय कला के इतिहास में विशिष्ट स्थान रखता है। पाल शासकों के शासनकाल (8वीं - 12 वीं सदी) में बिहार और बंगाल में कलात्मक समृद्धि देखने को मिली। इस कला के अंतर्गत मौर्यकाल में विकसित हो रहे कला परंपरा को निरंतरता एवं विस्तार प्रदान किया गया तथा राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर पर प्रचारित एवं प्रसारित किया गया।

पाल कला की प्रमुख विशेषता को स्थापत्य कला, मूर्ति कला एवं चित्रकला के विभिन्न रूपों के विकास के संदर्भ में देखा जा सकता है।

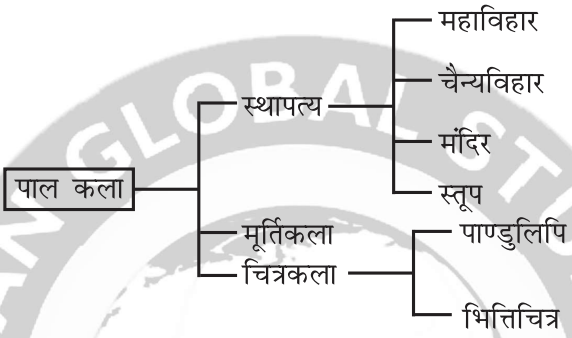

<u>स्थापत्य कला</u>

पाल काल के दौरान स्थापत्य कला का विकास धार्मिक एवं निवास स्थल दोनों रूपों में हुआ ।

पाल स्थापत्य कला मुख्यत: ईंट पर आधारित था। स्थापत्य कला के विभिन्न रूपों को क्रमश: इस प्रकार देख सकते है-

1. **महाविहार–** पाल काल के दौरान महाविहार का निर्माण बौद्ध - भिक्षुओं के निवास स्थल एवं शिक्षा केंद्र के रूप में हुआ।

प्रमुख महाविहार के उदाहरण :-

(क) विक्रमशिला महाविहार :-

- भागलपुर के अन्तिचक में स्थित
- निर्माणकर्त्ता - धर्मपाल

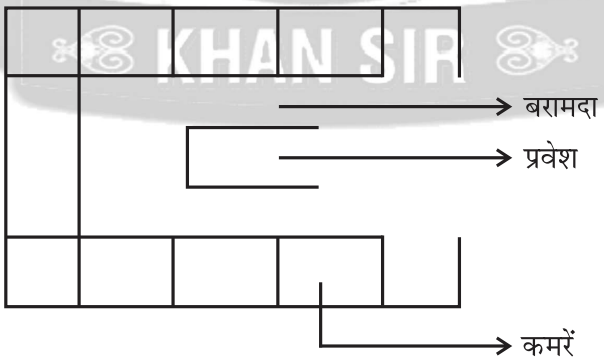

यह संरचना आज भी आधुनिक बिहार, बंगाल, झारखंड, पूर्वी उत्तर प्रदेश के ग्रामीण अंचल में देखी जा सकती है।

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

(ख) ओदंतपुरी महाविहार :-

- बिहार शरीफ (नालंदा) में स्थित
- निर्माणकर्त्ता - गोपाल

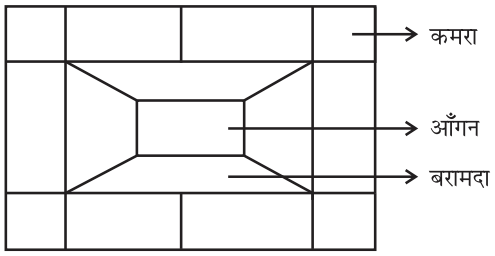

(ग) सोमपुरी महाविहार

- बांग्लादेश की नवगांव जनपद के बादलगाझी पहाड़पुर में स्थित
- निर्माणकर्ता - धर्मपाल

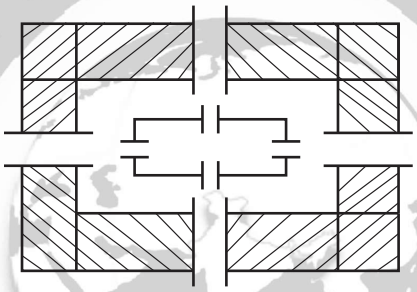

- यह UNESCO के विश्व धरोहर में भी शामिल है।

2. **चैत्य विहार–** बौद्ध प्रार्थना स्थलों के रूप में प्रसिद्ध इसके स्वरूप में पाल युगीन कला में अत्यधिक विस्तार हुआ। इसके प्रमाण बिहार के कई भागों में मिले है।
उदाहरण :- गया चैत्य विहार, नालंदा चैत्य विहार इत्यादि।

3. **स्तूप–** बौद्ध धर्म के प्रमुख धार्मिक केंद्र के रूप में प्रसिद्ध पाल काल में कई स्तूपों का निर्माण हुआ। इस काल में निर्मित स्तूप की संरचनात्मक विशेषता को निम्न आकृत्ति में देख सकते हैं-

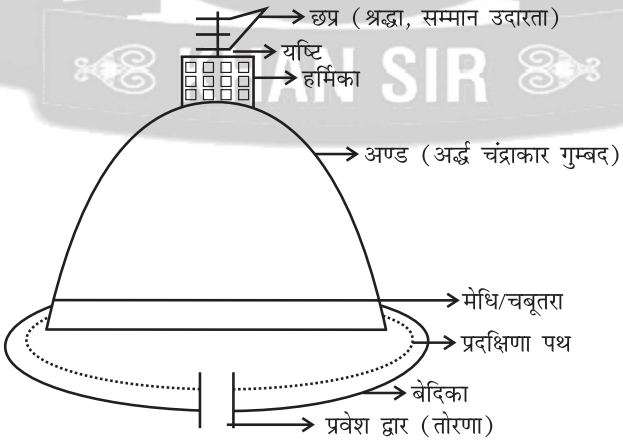

स्तूपों का निर्माण कच्ची तथा पक्की ईटों और मिट्टी से किया जाता था ।
उदाहरण :- गया का स्तूप इत्यादि ।

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

4. **मंदिर–** पाल शासक बौद्ध धर्मावलम्बी होने के साथ-साथ सहिष्णु भी थे। उन्होंनें हिंदू मंदिरों के निर्माण की भी प्रोत्साहित किया ।

उदाहरण :- कहलगाँव (भागलपुर) का गुफा मंदिर, गया में स्थित विष्णुपद मंदिर (इस मंदिर की सबसे बड़ी विशेषता उसमें निर्मित अर्द्ध मंडप है) इत्यादि ।

✦ **मूर्तिकला**

पाल काल में कांस्य मूर्तिकला एवं प्रस्तर मूर्तिकला दोनों प्रचलित था।

प्रसिद्ध कलाकार - धीमन एवं उसके पुत्र विठ्पाल (क्रमशः पाल शासक धर्मपाल एवं देवपाल के समकालीन थे) ने चित्रकला, मूर्तिकला और धातुओं को ढालने में अपनी दक्षता के कारण बहुत यश प्राप्त कर लिया था।

✦ **पाल मूर्तिकला की विशेषताएं :-**

पाल शासकों ने बौद्ध कला को आश्रय दिया। पालकालीन मूर्तिकला में छरहरी और मनोहर आकृतियों, पर्याप्त आभूषण तथा परंपरागत सजावट पर विशेष बल दिया गया है।

पालकालीन मूर्तिकला पर सारनाथ कला का प्रभाव माना गया है, जिसके अंतर्गत हल्के इकहरे बदन और पारदर्शी वस्त्र पहनी मूर्तियां प्रमुख हैं।

इस कला में मूर्त्तियों का निर्माण गया, मुंगेर और राजमहल से मिलने वाले भूरे और काले रंग के मुलायम बेसाल्ट पत्थरों से हुआ।

पालकालीन मूर्त्तियां लेखयुक्त है और इनमें तिथियाँ भी दी गई है।

पालकालीन शैली में बनी बौद्ध, जैन और हिंदू मूर्तियों में शैली के स्तर पर समानता है, किंतु आयुध, वाहन एवं लाक्षणिकता के स्तर पर भिन्नता को देखने को मिलती है।

नालंदा, गया, काशीपुर, सकरबंध, कुर्किहार आदि पालकालीन कला के प्रमुख स्थल है।

✦ **प्रमुख उदाहरण**

गया में कुर्किहार नामक स्थान से तत्कालीन काँसे की मूर्तियाँ बड़े पैमाने पर मिली है, जिसमें बौद्ध, एवं हिंदू देवी-देवताओं की मूर्तियों का निर्माण किया गया। बुद्ध, बोधिसत्व, अवलोकितेश्वर, विष्णु, बलराम आदि प्रमुख हैं। नालंदा का मंदिर संख्या - 13 धातु को गलाने और उसे साँचों में ढालने का पुरातात्विक प्रमाण प्रस्तुत करता है।

चित्रकला- में स्थापत्य कला एवं एवं पालयुगीन मूर्तिकला के साथ-साथ चित्रकला के क्षेत्र में भी काफी प्रगति हुई। यह दो रूपों में उपलब्ध है-

1. **पाण्डुलिपि**
2. **भित्तिचित्र**

1. **पाण्डुलिपि–** पांडुलिपियों में विषय वस्तु के अनुकूल एवं सजावटी चित्रण मिलता है। इन चित्रों में लाल, नीला, काला एवं सफेद रंगों का प्रधान रंगों के रूप तथा हरा, बैंगनी, हल्का गुलाबी एवं धूसर रंगों का सहायक रंगों के रूप में प्रयोग किया गया है।

इन शैली के चित्रों पर अजंता जैसी मांसल और कोमल आकृतियाँ मिलती है तथा उनकी मुद्राएँ एव भाव-भंगिमाएँ भी अजंता के समान है।

इनके श्रेष्ठतम उदाहरण हैं– अष्टसहस्त्रिका, प्रज्ञा-पारमिता और पंचरक्षा ।

पालकालीन चित्रकला के अवशेष बंगाल की एशियाटिक सोसाईटी, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के पुस्तकालय और ब्रिटिश संग्रहालय में सुरक्षित है।

✦ **भित्तिचित्र**

यह चित्रकला का ही एक रूप है।

इसमें ताम्रपत्र के बीचों-बीच महात्मा बुद्ध के जीवन से संबंधित चित्र सजाये गए हैं तथा किनारों पर बड़े और सुंदर अक्षरों में लिखा गया है।

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

इसके नमूने नालंदा जिले के सराय स्थल से बड़े पैमाने पर मिला हैं।
इन चित्रों में फल-फूल, पशु, मानव तथा ज्यामितीय रूप की प्रधानता हैं।
इन चित्रों की शैली पर अजंता, एलोरा तथा बाघ गुफा की शैली का स्पष्ट प्रभाव हैं।

✦ **<u>पाल कला और बौद्ध धर्म के मध्य संबंध :-</u>**

पाल शासक बौद्ध मतावलंबी थे, अतः इनके कला पर बौद्ध धर्म का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।
पाल शासकों द्वारा बौद्ध भिक्षुओं के आवास स्थल हेतु विक्रमशिला, ओदंतपुरी एवं सोमपुरी महाविहार का निर्माण कराया गया।
बौद्ध भिक्षुओं के प्रार्थना स्थल एवं धार्मिक केंद्र के रूप में अनेकों चैत्य विहार एवं स्तूपों का निर्माण कराया गया।
पालकालीन मूर्तिकला का संबंध बौद्ध धर्म से है, जिसके अंतर्गत बुद्ध, बोधिसत्व, अवलोकितेश्वर, मंजूश्री तारा, जमला और हयग्रीव को मूर्तियों में दर्शाया गया है।
पालकालीन चित्रकला में पाण्डुलिपि एवं भित्तिचित्र के माध्यम से महात्मा बुद्ध एवं उनसे जुड़े ऐतिहासिक तथ्यों को प्रदर्शित किया गया है।

●●●

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे Candidate should not write in this margin

Q. पटना कलम चित्रकला शैली का संक्षिप्त वर्णन करें।

Sol. पटना कलम शैली चित्रकला की एक विशिष्ट शैली है, जो मुख्यत: जनमानस पर आधारित है, अर्थात लोगों के रहन-सहन, जीवन-यापन, पठन-पाठन, मनोरंजन इत्यादि को चित्रों के माध्यम से अनावृत किया गया है। इस शैली का विकास प्रमुखतया 18 वीं सदी में मुगल साम्राज्य के पतन के बाद बिहार के पटना, पूर्णिया तथा आस-पास के क्षेत्रों में हुआ।

भारत (मानचित्र) में प्रदर्शित पटना कलम शैली का क्रमबद्ध विकास :-

1. **दिल्ली :-** मुगलकालीन भारत में अनेक क्षेत्रीय कला एवं शैली का उद्‌भव एवं विकास हुआ और यह केंद्र के रूप में प्रसिद्ध रहा। इस काल में कलाकारों को राजकीय संरक्षण प्राप्त था, परंतु मुगल शासक औरंगजेब का कला के प्रति निरंकुशता तथा कमजोर होते मुगल साम्राज्य में कलाकारों को आजीविका हेतु पलायन का मार्ग चुनना पड़ा।
2. **मुर्शिदाबाद (बंगाल) :-** मुगल साम्राज्य से कलाकारों का समूह पलायन के क्रम में मुर्शिदाबाद पहुँचा। बंगाल शासक मीरजाफर का पुत्र (जो कला के प्रति निरंकुश था) ने कला संबंधी पाबंदी लगाई, परिणामस्वरूप कलाकारों को पुन: एक बार विस्थापन का दंश झेलना पड़ा।
3. **पटना, पूर्णिया (बिहार) :-** इस क्रम में कलाकारों के कुछ समूह बिहार के पटना, पूर्णिया इत्यादि शहरों में जाकर बसे, तदनुसार कला की विशिष्ट क्षेत्रीय शैली का उदय हुआ, जो पटना शैली के नाम से जाना जाता है।

✦ **<u>पटना शैली का विकास</u>**

पटना कलम शैली पर मुगल शैली के प्रभाव के साथ-साथ तत्कालीन ब्रिटिश शैली का प्रभाव दिखाई पड़ता है, परंतु स्थानीय विशेषताएँ इस कला को विशिष्ट क्षेत्रियता के रूप में परिभाषित करती है।

✦ **<u>पटना कलम की विशेषताएँ</u>**

इस शैली की अपनी स्थानीय विशेषताएँ हैं। जो चित्रों के रेखांकन, रंग भरने की विधि, रंगों के चयन आदि के साथ-साथ विषय वस्तु के विकल्प मे भी स्पष्टता एवं प्रधानता दिखती है।

1. इस शैली के चित्र मुख्यत: लघुचित्रों की श्रेणी में आते है, जो सामान्यत: कागज पर उकेरा गया है। उपयोग में लाई गई कागज नेणता से मँगाए जाते थे। कालांतार में चित्रों में स्थायित्व एवं विविधता लाने के लिए सीसा, हाथी दाँत, चमड़ा, धातु अभ्रक आदि उपयोग में लाया गया।
2. इस शैली की मुख्य विशेषता सादगी एवं सामानुपातिक विन्यास पर आधारित है। इनमें चटकीला रंगों की जगह सौम्य और शांत रंगों का प्रयोग बहुतायत मात्रा में हुआ है। इस शैली में ब्रिटिश जलरंग पद्धति को प्रयुक्त किया गया है।

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

3. इस शैली के चित्रकारों को बारीकियों को गढ़ने और उसे प्रकाशित करने में निपुणता थी।
इस शैली में मुगल शैली जैसी भव्यता सामान्यत: नहीं दिखाई पड़ती है।

4. इस शैली के चित्रों में पक्षी का चित्रण प्रधान तौर पर मुख्य आकर्षण का केंद्र हैं।
इन चित्रों को देखकर स्पष्ट होता है कि इन शैली के कलाकरों को पक्षी के शरीर संरचना का पूर्णतया ज्ञान था।
इन लघुचित्रों में पक्षी के पंख एवं रोआँ का अंकन है।

5. इस शैली के चित्रों में आभूषण प्रणाली का अभाव है, फिर भी वहाँ शैलीगत विशेषताओं में दुर्बलता नहीं दिखती है।

उदाहरण स्वरूप-

(क) महादेव लाल द्वारा 'रागिनी-गाँधारी' में नायिका के वियोग पीड़ा को महीनता से दर्शाया इस चित्र गया है।

(ख) यमुना प्रसाद द्वारा 'बेगमों की शराबखोरी'- इस चित्र में मुखमंडल तथा इसके हाव-भाव, पृष्ठभूमि तथा वेशभूषा का चित्रांकन विषय वस्तु आधारित शैली स्पष्ट उदाहरण है।

6. इस शैली के कलाकारों द्वारा महीन कार्यों के लिए एक अथवा दो केसों वाले ब्रशों का प्रयोग किया जाता था। ब्रश को मजबूती और मुलायम रखने के लिए इसमें गिलहरी के पूँछ के केसों से बनाया जाता था।

7. इस शैली के चित्रों को रंगने के लिए विशेष निजी शैली को विकसित किया गया था।
सर्वप्रथम इसमें विषय-वस्तु को पेंसिल या चारकोल के माध्यम से रेखांकित किया जाता है, कलाकारों द्वारा तत्पश्चात रेखांकित भागों में तूलिका एवं रंगो के माध्यम से रंग भरा जाता है।

8. इस शैली में ज्यादातर गहरे भूरे, गहरे लाल, हल्के पीले एवं गहरे नीले, सफेद तथा काले रंग का प्रयोग हुआ है।
इस शैली के चित्रकार चित्र बनाने के लिए रंगों का उपयोग स्थानीय पौधों, फूलों तथा धातुओं आदि से करते थे। जैसे- सफेद रंग सीप को जलाकर, लाल रंग घूसर गेरुए मिट्टी से, काला रंग कालिख इत्यादि से तैयार करते थे।

9. इस शैली में निर्मित चित्रों में तत्कालीन बिहार के सामाजिक- राजनीतिक जीवन पद्धति को प्रदर्शित किया गया हैं।
सामाजिक पृष्ठभूमि को दर्शाते हुए चित्रकारों नें समाज के वंचित वर्गों को अपनी चित्रकारी में स्थान दिया है।

10. इस शैली में बिहार (विशेषकर पटना के आसपास क्षेत्रों) के सामान्य जनजीवन का चित्रांकन किया गया है, जो विषय-वस्तु के अनुरूप जीवन की आम घटनाओ पर आधारित है।

उदाहरणस्वरूप :

श्रमिक वर्ग - कुम्हार, नौकरानी, मेहतर, कुली इत्यादि ।
दस्तकारी वर्ग- बढ़ई, लोहार, रंगरेज इत्यादि ।
आवागमन के साधन - पालकी, घोड़ा, हाथी, एक्का, बैलगाड़ी इत्यादि ।
त्योहारों - होली, दशहरा इत्यादि ।
पठन-पाठन के साधन - मदरसा, पाठशाला इत्यादि ।

✦ **<u>मुगल (शाही) शैली से भिन्नता</u>**

कलम शैली मुगल (शाही) शैली से ग्रहण करते हुए भी अलग है।

प्रभाव- इस शैली में तुलनात्मक रूप से मुगल शैली की तरह आभूषण प्रणाली एवं भव्यता नहीं के बराबर है, अर्थात् यह शैली सादगी पर आधारित है।

मुगल शैली की चित्रांकन की विषय वस्तु समाज के श्रेष्ठ वर्गों से है, वहीं पटना कलम शैली की विषय वस्तु आम जनजीवन से संबंधित है।

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

✦ **पटना कलम शैली के प्रमुख चित्रकार**

इस शैली के ज्यादातर चित्रकार पुरुष थे। अत: इस शैली को पुरुषों की चित्रशैली भी कहा जाता है। सेवक राम इस शैली के प्रथम चित्रकार है।

19वीं सदी में प्रमुख चित्रकार एवं उनकी विशेषता- हुलास लाल होली, दशहरा त्योहारों आदि का चित्रण।

महादेव लाल - रागिनी गांधारी का चित्रण जिसमें नायिका के वियोग पीड़ा को दर्शाया गया है।

शिव दयाल - मुस्लिम निकाह से संबंधित, जिसमें सामाजिक समरसता को दर्शाया गया है।

20वीं सदी में प्रमुख चित्रकार एवं उनकी विशेषता- राधामोहन बाबू - पटना कलम के पुरोधा, इन्होंने पटना के आर्ट कॉलेज की नींव रखी।

ईश्वरी प्रसाद वर्मा इस शैली के अंतिम महान कलाकार।

✦ **पटना कलम शैली का पतन**

यह शैली प्रधानत: दो शताब्दी तक प्रचलित रहा किंतु 20 वीं सदी के अंत में शैली का क्रमिक रूप से पतन जारी रहा।

इस शैली के कलाकार आश्रयहीन होने लगे तथा अजीविका की खोज में अन्य व्यवसायों की तरफ आकर्षित होने लगे।

इस शैली के चित्रों का संग्रह पटना आर्ट कॉलेज, पटना म्यूजियम एवं खुदाबख्श लाइब्रेरी में सुरक्षित रखे गए है।

यह शैली बिहार की गौरवशाली परंपरा का अमूल्य धरोहर है। बिहार से विलुप्त हो रही कला, धरोहर और संस्कृति का संरक्षण, संवर्द्धन एवं विकास कर बिहार को कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में एक परिपक्व राज्य के तौर पर राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करना है।

इसी क्रम में वर्ष 2010 में बिहार सरकार द्वारा अपनी इस सांस्कृतिक धरोहर के बारे में जागरुकता फैलाने के उद्देश्य से पटना कलम चित्रों पर आधारित कैलेंडर प्रकाशित किया गया। सरकार एवं संस्थाओं द्वारा सरकारी योजनाओं एवं कार्यों जैसे- सरकारी भवनों के चहारदीवारों, राज्य के व्यस्ततम रेलवे स्टेशनों, सरकारी मासिक पत्रिकाओं, प्रदर्शनी इत्यादि के माध्यमों से पटना कलम को संरक्षण, संवर्द्धन एवं विकसित किया जा सकता है।

●●●

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

Q. मधुबनी चित्रकला की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

Sol. बिहार की ऐतिहासिक कला एवं सांस्कृतिक परंपरा प्रारंभ से ही शोध एवं आकर्षण का प्रधान केंद्र रहा है तथा यह भारत की समृद्धशाली एवं विविध परंपरा में प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक निरंतर अपना योगदान देता रहा है। इसी ऐतिहासिक कला एवं सांस्कृतिक परंपरा के पुरोधा के रूप में मधुबनी चित्रकला (मिथिला पेटिंग, जिसकी ख्याति केवल देश ही नहीं वरन् विदेशों में भी विशेष महत्व रखता है) अग्रणीय हैं।

✦ **<u>प्रारंभिक विकास एवं क्षेत्र</u>**

मधुबनी चित्रकला की शुरुआत का कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं है, परन्तु ऐसा माना जाता है ये चित्र राजा जनक ने राम-सीता के विवाह के दौरान महिला कलाकारों से बनवाए थे।

इस चित्रकला का प्रथम साक्ष्य महाकवि विद्यापति द्वारा लिखी गई पुस्तक कीर्तिपताका में मिलता हैं।

इस चित्रकला के प्रारंभिक अवस्था में चित्र निर्माण करने की व्यवस्था केवल उच्च वर्ण के महिलाओं को ही थी, कालांतर में इस चित्रकला व्यवस्था को सभी वर्णों ने अपना लिया। ध्यातव्य है कि पासवान जाति के समुदायों के द्वारा राजा सलहेस के जीवन वृतांत का चित्रण अति प्रशंसनीय है। इस समुदाय के लोग राजा सलहेस को अपने देवता के रूप में पूजते है।

इस कला एवं परंपरा का संरक्षण, संवर्द्धन एवं विकास मुख्यता बिहार के दरभंगा, पूर्णिया, मुजफ्फरपुर, मधुबनी एवं नेपाल के कुछ क्षेत्रों में हुआ।

प्रारंभ में यह चित्रकला रंगोली के रूप में देखने को मिलती थी। वर्तमान समय में कपड़ा, दीवारों, कागज, शैल इत्यादि पर चित्रण किया जा रहा है।

मूलत: इस चित्रकला में महिलाओं का वर्चस्व था, वर्तमान दौर में पुरुषों का भी अपना निर्णायक स्थान है।

✦ **<u>मधुबनी चित्रकला के प्रकार</u>**

मधुबनी चित्रकला को दो प्रकारों में विभाजित किया गया है- **1. भित्ति चित्र तथा 2. अरिपन ।**

1. भित्ति चित्र

मधुबनी चित्रकला के भित्ति चित्र को दो भागों में बाँटा जा सकता है।

(i) गोसनी के घर की सजावट

(ii) कोहबर घर

(i) गोसनी घर :- गोसनी घर (पूजा घर) की सजावट में धार्मिक महत्व के चित्र होते है। इस चित्रण में देवी-देवताओं का चित्रण किया जाता है। जैसे- दुर्गा, सीता-राम, राधा-कृष्ण, शिव-पार्वती, लक्ष्मी-विष्णु, विष्णु के दस अवतार इत्यदि देवताओं का चित्रण बहुलता में किया गया है।

(ii) कोहबर घर :- इसमें लेखन एवं चित्रण ज्यामितीय पद्धति से हुआ तथा इसमें अनेक प्रतीक चिन्हों का निरूपण किया गया है।

इसके भीतर और बाहर बने चित्र कामुक प्रवृति के होते है। बाहर बने चित्र में रति एवं कामदेव के चित्र तथा भीतर बने चित्र में पुरुष-नारी के जनन गणों की आकृति तथा चारों कोणों पर यक्षिणी के चित्र बनाये जाते हैं।

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

प्रतीक चिन्हों के रूप में पौधा, पशु, पक्षी की चित्रकारी प्रयुक्त होती है।

केला - मांसलता के प्रतीक के रूप में

तोता - कामवाहक प्रतीक के रूप में

मछली - कामोत्तेजक प्रतीक के रूप में

बाँस - वंश-वृद्धि के प्रतीक के रूप में

सिंह - शक्ति के प्रतीक के रूप में

हाथी-घोड़ा - ऐश्वर्य के प्रतीक के रूप में

हंस - मयूर - शांति के प्रतीक के रूप में

सूर्य चन्द्र - दीर्घजीवन के प्रतीक के रूप में

अरिपन :- मिथला क्षेत्र में त्योहारों के अवसर पर आँगनों और दीवारों पर चित्रकारी करने की बहुत पुरानी परंपरा है, जिन्हें बनाने में कूटे हुए चावल को पानी और रंग में मिलाकर प्रयोग किया जाता है तथा इस चित्रों को ऊँगली से ही बनाया जाता हैं।

जैसे– मनुष्यों और पशु-पक्षियों, फूल, पेड़ और फलों, तांत्रिक देवी-देवताओं तथा स्वास्तिक इत्यादि के चित्र ।

✦ **<u>मधुबनी चित्रकला की विशेषताएँ</u>**

प्रतीकात्मक, ज्यामितीय तथा तार्किक स्वरूप इस चित्रकला की प्रधान विशेषता है। इसके अतिरिक्त इस कला की विशेषताओं को निम्नवत् दर्शाया गया है -

प्रारंभ में चित्र मुख्यत: दीवारों पर बनाए जाते थे बाद में स्थायित्व एवं व्यावसायिक कला दृष्टिकोण को समाहित करते हुए कपड़ा और कागज इत्यादि पर चित्रांकन किया जाने लगा।

चित्र मुख्यत: ऊँगली अथवा बाँस की कुची से बनाया जाता है। इस कला में कल्पनात्मक, भावनात्मक तथा प्राकृतिक रंगो का प्रयोग इसको विशिष्ट आकर्षण का केंद्र बनाता है।

काला रंग– काजल एवं जौ को जला करके

पीला रंग– चूना एवं बैर के पत्तों को दूध में मिलाकर

नारंगी रंग– पलाश के फूलों से

लाल रंग– कुसुम के फूलों अथवा तूत के फूलों से

हरा रंग– सीम के पत्तों से

यद्यपि व्यावसायिक दृष्टि से प्राकृतिक रंगो के साथ-साथ अब कृत्रिम रंगो का प्रयोग होने लगा है।

✦ **<u>प्रमुख कलाकार</u>**

सिया देवी, कौशल्या देवी, गंगा देवी, जगदम्बा देवी, सीता देवी, भगवती देवी, बुआ देवी इत्यादि इस शैली के प्रसिद्ध कलाकार है।

जगदम्बा देवी, सीता देवी और बुआ देवी को पद्मश्री पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।

✦ **<u>मधुबनी चित्रकला की उपलब्धियाँ</u>**

मधुबनी चित्रकला की ख्याति में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है, जिससे इस काल के कलाकारों को पहचान मिली तथा उनकी आर्थिक स्थिति में भी वृद्धि हुई है।

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

जयंती-जनता एक्सप्रेस नामक ट्रेन के डिब्बों में मधुबनी चित्रकला का चित्रांकन करवाकर इसकी लोकप्रियता को बढ़ाने का काम किया गया। दिल्ली में संसद भवन के द्वार पर तथा रेलवे स्टेशन के दीवारों पर, पटना में रेलवे स्टेशन पर इस चित्रकला के चित्रों को बनाया गया है।

वर्ष 1988 में तोक्यो हासेगाम द्वारा जापान के तोकामाची हिल्स के लिगाता क्षेत्र में मिथिला लोक चित्रकला संग्रहालय की स्थापना की गई।

2018-19 में भारतीय रेल के समस्तीपुर मंडल में एक ट्रेन पर मधुबनी चित्रकला बनाया गया था, जिसे विश्व में काफी प्रशंसा मिली। मधुबनी रेलवे स्टेशन पर बीते कुछ वर्षों में रेलवे क्राफ्ट वाला समूह एवं स्थानीय कलाकारों द्वारा लार्जेस्ट मिथिला आर्ट गैलरी का निर्माण किया गया है।

मधुबनी चित्रकला, क्षेत्रीय कला और परंपरा की पृष्ठभूमि में उल्लेखनीय स्थान रखता है। सरकार एवं संस्थाओं द्वारा इस चित्रकला के संरक्षण और संवर्द्धन के लिए उत्कृष्ट कार्य किए जा रहे हैं। उल्लेखनीय है कि मधुबनी पेटिंग के गढ़ माने जाने वाले मधुबनी जिला के जितवारपुर गांव को हस्तशिल्प विभाग द्वारा पहले ही शिल्पग्राम घोषित किया गया है। यह कदम चित्रकला के अन्य क्षेत्रों में चित्रांकण कार्य को प्रोत्साहित कर रहा है।

●●●

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin